SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

भारतीय संगीत में स्वरों का संख्यात्मक विकास

KHUSH PAUL[1] DR. SHWETA KUMARI [2]

[1]Research scholar, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
[2]Assistant Professor, Mahila Mahavidyalaya, Banaras Hindu University, Varanasi

सार

भारतीय संगीत में स्वरों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, स्वर संगीत का मूल आधार तत्व है | भारतीय संगीत में अधिकतर विद्वानों ने स्वरों की उत्पत्ति का सम्बन्ध पशु -पक्षियों की ध्वनियों के अनुकरण के फलस्वरूप माना तथा विकृत स्वरों की उत्पत्ति कालांतर सांगीतिक आवश्यकता अनुसार हुई | स्वर की परिभाषा का उल्लेख सर्वप्रथम मतंग कृत वहृद्देशी ग्रन्थ में प्राप्त होता है, किन्तु महर्षि मतंग ने स्वरों की संख्या भरत के समान ही मानी | 13वी शताब्दी में शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में भरत द्वारा वर्णित स्वरों में परिवर्तन कर 12 विकृत स्वरों के साथ कुल 19 स्वरों का उल्लेख किया तत्पश्चात लगभग सभी ग्रंथकारों ने भिन्न-भिन्न स्वरों की संख्या का उल्लेख कर 22 श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना की |

विधि :- प्रस्तुत शोध पत्र में दत्त संकलन हेतु द्वितिय माध्यमों का प्रयोग किया गया है |

सूचक शब्द :- *स्वर, विकृत, स्थापना, संख्या, ग्रन्थ, संगीत*

भूमिका

सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित तथा अप्रचलित समस्त संगीत विधाओं का आधार स्वर है | किसी भी संगीत की रचना स्वर के बिना असंभव है, विभिन्न प्रकार के स्वर समूहों के प्रयोग से ही एक मधुर सांगीतिक रचना की उत्पति हो सकती है | भारतीय संगीत में स्वरों का इतिहास अत्यंत प्राचीन होने के साथ-साथ अत्यंत समृद्ध एवं व्यापक है | वैदिक काल में यहाँ सामगान तीन स्वरों में गाया जाता था, वहीं कालान्तर मानव जीवन के विकास के साथ-साथ संगीत का भी विकास हुआ तो स्वरों की संख्या में वृद्धि का क्रम भी आरम्भ हुआ | भिन्न-भिन्न ग्रंथकारों तथा संगीतकारों ने तत्कालीन संगीत की आवश्यकता के अनुसार स्वरों की संख्या का निर्धारण कर अपनी-अपनी कृतियों में स्वरों का उल्लेख किया | भरत काल से पूर्व स्वरों की संख्या सात हो गई थी, किन्तु विकृत स्वरों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था | सर्वप्रथम भरत ने दो विकृत स्वरों की आवश्यकता की पूर्ति हेतु अंतर गंधार तथा काकली निषाद स्वरों को श्रुतियों पर स्थापित कर स्वरों की संख्या 9 कर दी | भरत काल में आरम्भ हुआ विकृत स्वरों में वृद्धि का क्रम वर्तमान काल में आ कर कुछ स्थिर हुआ है, वर्तमान काल में 7 शुद्ध के साथ 5 विकृत स्वरों के मिश्रण के साथ कुल 12 स्वर सर्वसम्मति में मान्यता प्राप्त है |

शोध विषय

भारतीय संगीत हो या संसार में किसी भी प्रकार की संगीत विधा हो सभी का आधार स्वर है | स्वर का अर्थ है जो स्वयं अपने आप में मधुर और जन-रंजन हो वह स्वर है | किन्ही दो वस्तुओं के परस्पर आघात से ध्वनि की उत्पत्ति होती है, ध्वनि से नाद, नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर उत्पन्न होता है | निसंदेह भारतीय मनीषियों को पहले स्वर का ज्ञान हुआ तत्पश्चात श्रुतिओं की खोज हुई, किन्तु श्रुतियों के गहन अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि श्रुति स्वर की जननी है | "श्रुतियों से ही स्वर की उत्पत्ति होती है | स्वरों की उत्पत्ति में श्रुतियाँ स्वतः ही अभिव्यक्त हो जाती है |"[1]भारतीय संगीत में सर्वसम्मति से एक सप्तक में 22 श्रुतियाँ मानी, इन्ही 22 श्रुतियों में से 7 मुख्य श्रुतियाँ चुन ली गई जिन्हें शुद्ध स्वर की संज्ञा दी गई | अनेक भारतीय संगीताचार्यों ने सात स्वरों की उत्पत्ति पशु पक्षियों से भी मानी है | अनेक विद्वानों का विचार है कि सर्वप्रथम मनुष्य ने विभिन्न पशु पक्षियों की ध्वनियों का अनुकरण कर सात स्वरों को सिद्ध किया | पशु पक्षियों से स्वर की उत्पत्ति के विभिन्न मत निम्न तालिका में दर्शाए जा रहा है :-

[1] शर्मा डॉ. स्वतंत्र. (1996).भारतीय संगीत का वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग, पृष्ठ संख्या-41

स्वरों के नाम	नारदिय शिक्षा	याज्ञवल्क्य शिक्षा	बृह्द्देशी	संगीत मकरन्द	विनियोगद्वार	भरत भाष्यम्	संगीत रत्नाकर	संगीत दर्पण
षडज	मयूर	शिखण्डी	मयूर	मयूर	मोर	मोर	मयूर	मयूर
ऋषभ	गाय	अजा	चातक	चातक	कुक्कुट	वृषभ	चातक	चातक
गंधार	अजा	गाय	अजा	अजा	हंस	अजा	बकरा	बकरा
मध्यम	क्रौंच	क्रौंच	क्रौंच	क्रौंच	मेष	क्रौंच	क्रौंच	क्रौंच
पंचम	कोकिल	कोकिल	कोकिल	पिक	कोकिल	कोकिल	कोकिल	कोकिल
धैवत	अश्व	अश्व	दर्दुर	अश्व	सारस	अश्व	दर्दुर	मेंडक
निषाद	कुन्जर	गज	गज	गज	गज	गज	गज	गज

उपर्युक्त सभी मत में से बृह्द्देशी ग्रंथ में महर्षि मतंग ने पशु पक्षियों से स्वरों की उत्पत्ति का वर्णन कोहल के नाम से किया है | विनियोगद्वार जैन धर्म से सम्बंधित एक धार्मिक ग्रन्थ है, इसमें भी स्वरों की उत्पत्ति पशु पक्षियों से मानी गई है तथा जैन धर्म के अनेक ग्रन्थों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जैन काल में स्वर को 'घोष' संज्ञा प्राप्त थी | पशु पक्षियों से स्वरों की उत्पत्ति का सर्वाधिक प्रचलित मत शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर तथा पंडित दामोदर कृत संगीत दर्पण है |

भारतीय संगीत का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है | भारतीय संस्कृति के आधारग्रंथ वेदों में भी संगीत संबंधित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है | भारतीय संस्कृति के ग्रन्थों में स्वर का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होता है | ऋग्वेद में स्वर के निम्नलिखित तीन भेदों का उल्लेख मिलता है :-

- उदात – सामान्य स्वर से ऊँचा स्वर उदात
- अनुदात – सामान्य स्वर से निचा स्वर अनुदात
- स्वरित – जिसमें उदात तथा अनुदात का समहार हो

ऋग्वेद में वर्णित उदात, अनुदात तथा स्वरित, स्वर नहीं अपितु स्वर की उच्चारण विधियाँ है | वेद-पाठ में स्वर की उच्चारण विधियों का विशेष महत्व था, उच्चारण में शुद्धता बनी रहे इसके लिए उदात, अनुदात तथा स्वरित के साथ हस्तचालन की विधि भी बनाई गई, परिणामस्वरूप प्राचीन वेद पाठ उदात, अनुदात तथा स्वरित अपने हस्तचालन नियमों के साथ आज भी सुरक्षित है |

ऋग्वेद के दसवें मण्डल में सात स्वर होने का उल्लेख प्राप्त होता है जिससे ये स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल में ही स्वरों की संख्या सात हो गई थी तथा इन्हें क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र तथा अतिस्वार्य कहा जाता था | वैदिक काल में स्वर को यम संज्ञा प्राप्त थी | सामवेद को संगीत का वेद कहा जाता है इसमें भी सात स्वर होने का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है | नारदिये शिक्षा में नारद साम सप्तक का विकास दो प्रकार से वर्णित करते है, नारद के अनुसार सामवेद में "प्रथम, द्वितीय, तृतीये तथा चतुर्थ स्वरों के नाम संखात्मक शब्दों द्वारा व्यक्त किये गए है तथा मन्द्र, क्रुष्ट, अतिस्वार्य इन तीन स्वरों के नाम वर्णात्मक शब्दों द्वारा व्यक्त किय गए है, यह अकारण नही है इन दो प्रकार के नामों से साम सप्तक के विकास का संकेत मिलता है | ऐसा जान पड़ता है कि पहले साम में तीन से चार स्वरों का प्रयोग होता था |"[1] महर्षि नारद के अनुसार वैदिक स्वर क्रुष्ट, प्रथम,

द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र तथा अतिस्वार्य लौकिक स्वर म ग रे सा नि ध़ प़ के समान थे | वैदिक स्वर संज्ञाएँ क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय आदि से परिवर्तित हो कर कब षड्ज, ऋषभ, गंधार आदि हो गई इसका प्रमाण प्राचीन किसी भी ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से उपलब्द नहीं है | किन्तु नाटयशास्त्र

1 सिंह ठाकुर जयदेव.(2016). भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी तृतीय संस्करण,पृष्ठ संख्या-46

के 28वे अध्याय में षड्ज, ऋषभ, गंधार आदि संज्ञाएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है | स्वरों की संख्या की दृष्टि से देखे तो भरत काल से लेकर आधुनिक काल तक स्वरों की संख्याओं में परिवर्तन होते रहे है | विभिन्न ग्रन्थकारों का विभिन्न ग्रन्थों में स्वरों की संख्या का वर्णन निम्नलिखित है :-

नाट्यशास्त्र :- वैदिक काल से लेकर भरत काल तक स्वरों की संख्या सात ही थी | भरत काल में सर्वप्रथम सात शुद्ध स्वरों के अतिरिक्त दो अन्य स्वरों का विकास हुआ, प्रथम अन्तरगंधार तथा द्वितीय काकली निषाद इन्हें भारत ने विकृत स्वर कहा | इस प्रकार भरत के स्वर सप्तक में सात शुद्ध तथा दो विकृत स्वर मिल के स्वरों की संख्या 9 हो गई | महर्षि भरत की 22 श्रुतिओं पर 9 स्वरों की स्थापना प्रथम तालिका में दर्शाई जा रही है |

बृहद्देशी :- स्वरों की दृष्टि से मतंग कृत बृहद्देशी नाट्यशास्त्र के बाद दूसरा सब से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है | "संगीत के उपलब्ध ग्रन्थों में से बृहद्देशी ग्रन्थ में सर्वप्रथम 'स्वर' शब्द की परिभाषा वर्णित है |"[1] महर्षि मतंग के अनुसार स्वर शब्द के दो खण्ड किये गये है | 'स्व' तथा 'र' इनका अर्थ है :- स्व का अर्थ है स्वयं, तथा र का अर्थ है राजते अर्थात 'जो स्वयं प्रकाशित हो वह स्वर है |'मतंग के पश्चात अभिनव गुप्त कृत अभिनव भारती, नान्यदेव कृत भरतभाष्यम, पर्श्वदेव कृत संगीत समयसार, शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर आदि ग्रन्थों में स्वर की परिभाषा का उल्लेख मिलता है | किन्तु सभी ग्रन्थों में स्वर की परिभाषा मतंग की परिभाषा के सम्मान ही प्रतीत होती है |

संगीत रत्नाकर :- स्वरों के संख्यात्मक विकास की दृष्टि से नाट्यशास्त्र के पश्चात शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रन्थ है | नाट्यशास्त्र से लेकर संगीत रत्नाकर तक सभी ग्रन्थकारों ने स्वरों की संख्या भरत के अनुसार ही सात शुद्ध तथा दो विकृत स्वरों के साथ कुल 9 स्वरों का उल्लेख किया है | नाट्यशास्त्र के पश्चात 13वी शताब्दी में संगीत रत्नाकर से स्वरों का संख्यात्मक विकास देखने को मिलता है | शारंगदेव ने सर्वप्रथम स्वर के चार गुणों का वर्णन किया है :-स्वर श्रुति के अनन्तर उत्पन्न होता है | उसमे अनुरणनात्मकता होती है | वह स्वराजित होता है, अर्थात उत्पत्ति की दृष्टि से आत्मनिर्भर है | श्रोताओं के चित का रंजन करता है |"[2]

तत्पश्चात 7 शुद्ध तथा 12 विकृत स्वरों के साथ अपने सप्तक में कुल 19 स्वरों का उल्लेख किया | संगीत रत्नाकर में वर्णित स्वर प्रथम तालिका में दर्शाए जा रहे है |

राग तरंगिणी:- राग तरंगिणी ग्रन्थ की रचना पं० लोचन ने की | यह ग्रन्थ कब लिखा गया इस विषय में विद्वान एकमत नहीं है, इस ग्रन्थ के समय का सटीक अनुमान लगाना कठिन है , किन्तु अधिकतर विद्वान इस ग्रन्थ का समय लगभग 14वी से 15वी शताब्दी के मध्य मानते है | पं० लोचन ने अपने स्वर सप्तक में 7 शुद्ध तथा 10 विकृत कुल 17 स्वरों का उल्लेख किया | पं० लोचन ने ऋषभ स्वर का एक विकृत भेद, गंधार स्वर के 4 विकृत भेद, मध्यम स्वर का एक विकृत भेद, धैवत स्वर का एक विकृत भेद तथा निषाद स्वर के 3 विकृत भेद बताये है | राग तरंगिणी ग्रन्थ के स्वर द्वितीय तालिका में दर्शाए गए है |

स्वरमेल कलानिधि :- स्वरमेल कलानिधि ग्रन्थ की रचना पं० रामामात्य ने सन् 1550 ई० में की | "रामामात्य ने शारंगदेव के 12 विकृत स्वरों में सात को रखकर पांच का परित्याग कर दिया"[3] | इस प्रकार रामामात्य ने अपने स्वर सप्तक में 7 शुद्ध तथा 7 विकृत स्वरों के साथ स्वरों की कुल संख्या 14 मानी | इन्होने ऋषभ तथा धैवत स्वर का कोई विकृत भेद नहीं माना | स्वरमेल कलानिधि ग्रन्थ की स्वर स्थापना समझने के लिए द्वितीय तालिका को देखिए |

सद्राग चन्द्रोदय :- सद्राग चन्द्रोदय के रचनाकार पुण्डरीक विट्ठल है | इस ग्रन्थ का अनुमानित समय 1565 ई० से 1575 ई० के मध्य बताया जाता है | इस ग्रन्थ में 7 शुद्ध तथा 7 विकृत स्वरों के साथ स्वरों की कुल 14 स्वरों का उल्लेख मिलता है | पुण्डरीक विट्ठल के अनुसार सा,

12 शर्मा डॉ. स्वतंत्र. (1996). भारतीय संगीत का वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग, पृष्ठ संख्या-37

2 चौधरी सुभाष रानी.(2002). संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत, कनिष्का पब्लिश डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 50

3 सिहं प्रो० ललितकिशोर. (2011).ध्वनि और संगीत, भारतीय ज्ञानपीठ 18, सातवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या – 147

म, तथा प स्वर अपनी शुद्ध अवस्था से एक श्रुति नीचे होने पर क्रमश: लघु सा, लघु म तथा लघु प कहलाते है | शुद्ध गंधार अपनी श्रुति से एक श्रुति ऊँचा होने पर साधारण तथा दो श्रुति ऊँचा होने पर अंतर ग होता है | शुद्ध नि अपने स्थान से एक श्रुति ऊँचा होने पर कैशिक नि तथा दो श्रुति ऊँचा होने पर काकली निषाद कहलाते है | सद्राग चन्द्रोदय की स्वर स्थापना समझने के लिए द्वितीय तालिका को देखिय |

रागमाला :- रागमाला ग्रन्थ के रचनाकार भी पुण्डरीक विट्ठल ही है | पुण्डरीक विट्ठल ने राग माला ग्रन्थ में 7 शुद्ध तथा 16 विकृत स्वरों के साथ स्वरों की कुल संख्या 23 बताई | पुण्डरीक विट्ठल के अनुसार रे, ग, म, ध, तथा नि अपने शुद्ध स्थान से ऊँचा होने पर एक गतिक रे , एक गतिक ग, एक गतिक म, एक गतिक ध तथा एक गतिक नि होंगे, इसी प्रकार अपने स्थान से दो श्रुति ऊँचा होने पर दो गतिक रे तथा तीन श्रुति ऊँचा होने पर तीन गतिक रे कहलाते है | श्रुति स्वर स्थापना द्वितीय तालिका में देखिए |

राग मंजरी :- पुण्डरीक विट्ठल ने कुल चार ग्रन्थ लिखे सद्राग चन्द्रोदय, रागमाला, राग मंजरी तथा नर्तन निर्णय | नर्तन निर्णय ग्रन्थ नाम से ही स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ नृत्य पर आधारित ग्रन्थ है | सद्राग चन्द्रोदय तथा राग माला के स्वर सप्तक के विषय में ऊपर बताया जा चूका है, राग मंजरी में वर्णित स्वरों की संख्या राग माला सामान 7 शुद्ध तथा 16 विकृत स्वरों के साथ कुल संख्या 23 है, किन्तु राग मंजरी में वर्णित विकृत स्वरों के नाम राग माला से कुछ भिन्न है | इसमें रे अपने स्थान से एक श्रुति ऊँचा होने से कौशिक रे, दो श्रुति ऊँचा होने पर उच्छङखल रे, तथा तीन श्रुति ऊँचा होने पर अति उच्छङखल कहलाते है | इसी तरह गंधार चार श्रुति ऊँचा होने पर ऊर्ध्वखल ग कहलाता है | राग मंजरी की श्रुति स्वर स्थापना द्वितीय तालिका में देखिए |

रस कौमुदी :- रस कौमुदी के रचनाकार पं० श्रीकण्ठ है | "आचार्य ब्रहस्पति के अनुसार सन् 1575 ई० में श्रीकण्ठ ने रस कौमुदी की रचना की |"[1] श्रीकण्ठ ने अपने स्वर सप्तक में 7 शुद्ध तथा 7 विकृत कुल 14 स्वर स्वीकार किये है | सा, म, प अपनी श्रुति से एक श्रुति नीचे होने पर इन्हें पत अथवा उपान्त्य विशेषण लगा के संबोधित किया गया है | रस कौमुदी की श्रुति स्वर स्थापना द्वितीय तालिका में देखिए **राग विवोध :-** राग विवोध ग्रन्थ की रचना सोमनाथ ने सन् 1610 ई० में की | इस ग्रन्थ में सोमनाथ ने 7 शुद्ध तथा 15 विकृत स्वरों के साथ कुल 22 स्वरों का उल्लेख किया | इसमें सा, म तथा प एक श्रुति ऊँचा होने पर मृदु सा, मृदु म तथा मृदु प कहलाते है |

चतुर्दंडीप्रकाशिका :- चतुर्दंडीप्रकाशिका ग्रन्थ दक्षिणी भारतीय संगीत के प्रसिद्ध विद्वान व्यंकटमखी द्वारा सन् 1640 – 50 ई० के मध्य में लिखा गया था | इस ग्रन्थ में व्यंकटमखी ने 7 शुद्ध तथा 5 विकृत स्वर क साथ स्वरों की संख्या 12 मानी है |

अनुपसंगीत विलास :- अनुप संगीत विलास ग्रन्थ की रचना भावभट्ट ने 17वी के अंत में की | भावभट्टा बीकानेर के राजा अनुप सिंह के आश्रय में रहते थे, अतः अनुपसिंह की आज्ञा से भावभट्ट ने अपने आश्रय दाता अनुपसिंह के नाम पर अनुप संगीत विलास ग्रन्थ की रचना की | इस ग्रन्थ में भावभट्ट ने 7 शुद्ध कर अतिरिक्त 35 विकृत स्वरों साथ कुल 42 स्वरों का उल्लेख किया है | भावभट्ट के अतिरिक्त किसी भी अन्य ग्रंथकार ने स्वरों की इतनी अधिक संख्या नहीं मानी है | भावभट्ट के अनुसार सा तथा प स्वरों का कोई भी विकृत रूप नहीं है, "रे, ग, म, ध, नि अपने शुद्ध स्थान से एक श्रुति ऊँचे होने पर 5 तीव्र, दो श्रुति ऊँचे होने पर 5 तीव्रतर, तीन श्रुति ऊँचे होने पर 5 तीव्रतम और चार श्रुति ऊँचे होने पर 5 अति तीव्रतम, कुल (5×4 = 20) 20 शुद्ध अवस्था से ऊँचे विकृत स्वर प्राप्त हुए | यही पाचों स्वर जब अपनी शुद्ध अवस्था से एक श्रुति नीचे होने पर 5 कोमल,दो श्रुति निचे होने पर 5 अति कोमल, तीन श्रुति नीचे होने पर 5 अति अति कोमल, कुल (5×3 = 15) 15 विकृत स्वर शुद्ध अवस्था से नीचे हुए |"[2] इस प्रकार 20+15+7 = 42 स्वर हुए |

संगीत पारिजात :- संगीत पारिजात ग्रन्थ की रचना सन् 1650 ई० में पंडित अहोबल ने की | 7 शुद्ध + 14 तीव्र + 8 कोमल स्वरों के साथ स्वरों की कुल संख्या 29 मानी | पं० अहोबल के अनुसार शुद्ध स्वर अपनी अवस्था से एक श्रुति नीचे होने पर कोमल तथा दो श्रुति नीचे होने

[1] टाक डॉ. तेज सिंह. (2003). संगीत विज्ञानं एवं गणित, बेकराँ आलीम फाउंडेशन लखनऊ, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 2

[2] टाक डॉ. तेज सिंह. (2003).संगीत विज्ञानं एवं गणित, बेकराँ आलीम फाउंडेशन लखनऊ, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 57

पर पूर्व स्वर कहलाते है तथा जब स्वर अपनी अवस्था से एक श्रुति ऊँचा होता है तो तीव्र, दो श्रुति ऊँचा होने पर तीव्रतर, तीन श्रुति ऊँचा होने पर तीव्रतम तथा चार श्रुति ऊँचा होने पर अतितीव्रतम कहलाता है |

हृदय प्रकाश तथा हृदय कौतुक :- हृदय प्रकाश तथा हृदय कौतुक इन दोनों ग्रन्थों की रचना पं० हृदय नारायण देव ने लगभग सन् 1650 से 1660 ई० के मध्य की | इन दोनों ग्रन्थों की श्रुति स्वर व्यवस्था एक समान है | पं० हृदय नारायण देव के अनुसार सात शुद्ध के अतिरिक्त रे, ग, म, ध, नि अपने स्थान से एक श्रुति ऊँचे होने पर तीव्र, दो श्रुति ऊँचे होने पर तीव्रतर तथा ग, म, नि स्वर तीन श्रुति ऊँचे होने पर तीव्रतम तथा ग चार श्रुति ऊँचा होने पर अतितिव्रतम स्वर कहलाते है | रे और ध एक श्रुति निचे होने पर कोमल स्वर कहलाते है | इस प्रकार 5 तीव्र, 5 तीव्रतर, 3 तीव्रतम, 1 अति तीव्रतम तथा 2 कोमल स्वर मिल कर विकृत स्वरों की संख्या 16 होती है | पं० हृदय नारायण देव ने सात शुद्ध तथा 16 विकृत स्वरों क साथ स्वरों की कुल संख्या 23 स्वीकार की है |

राग तत्व विवोध:- राग तत्व विवोध ग्रन्थ की रचना पं० श्री निवास ने 17वी शताब्दी के उतरार्ध में की, पं० श्री निवास पं० अहोबल ने अनुयायी थे | अतः अपने ग्रन्थ राग तत्व विवोध इन्होने पं० अहोबल की तरह ही श्रुतियों पर शुद्ध विकृत स्वरों की स्थापना की पं० अहोबल की तरह पं० श्री निवास ने सात शुद्ध तथा 22 विकृत कुल 29 स्वरों को मान्यता प्रधान की | राग विवोध, चतुर्दंडीप्रकाशिका, अनुप संगीत विलास, संगीत पारिजात, हृदय प्रकाश, हृदय कौतुक तथा राग तत्व विवोध ग्रन्थों श्रुति स्वर स्थापना तृतीय तालिका में दर्शाई गई है |

सन् 1779 से 1804 ई० के मध्य महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा रचित ग्रन्थ "राधा गोविन्द संगीत सार" तथा सन् 1813 ई० में नगमाते-आसफी विलावल थाट को शुद्ध सप्तक के रूप में स्वीकर किया तत्पश्चात पं० विष्णु नारायण भातखंडे ने भी स्वरों की स्थापना स्वर की अंतिम श्रुति के स्थान पर प्रथम श्रुति पर कर के विलावल को शुद्ध सप्तक के रूप में स्वीकर किया है तथा साथ शुद्ध के अतिरिक्त 5 विकृत कुल 12 स्वरों को मान्यता दी वर्तमान काल में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा मान्यता प्राप्त 12 स्वर ही उत्तर भारतीय संगीत में सर्वाधिक प्रचलित है | पंडित विष्णु दिगम्बर पुलास्कर जी ने 12 विकृत तथा 7 शुद्ध कुल 19 स्वर माने है, किन्तु इनके स्वर प्रचार में नहीं है | वर्तमान समय में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी की पद्धति को ही सभी संगीतकार स्वीकार करते है |

प्रथम तालिका

क्र०सं०	श्रुतियों के नाम	नाट्यशास्त्र		संगीत रत्नाकर	
		शुद्ध स्वर	विकृत स्वर	शुद्ध स्वर	विकृत स्वर
1.	तीव्रा				कैशिक निषाद
2.	कुमुद्वती		काकली निषाद		काकली निषाद
3.	मन्दा				च्युत षडज
4.	छान्दोवती	षडज		षडज	अच्युत षडज
5.	दयावती				
6.	रंजनी				
7.	रक्तिका	ऋषभ		ऋषभ	विकृत ऋषभ
8.	रोद्री				
9.	क्रोधा	गंधार		गंधार	
10.	वज्रिका				साधारण गंधार
11.	प्रसारिणी		अंतर गंधार		अंतर गंधार
12.	प्रीति				च्युत मध्यम
13.	मार्जनी	मध्यम		मध्यम	अच्युत मध्यम
14.	क्षिति				
15.	रक्ता				

16.	संदीपिनी				मध्यमग्रामिक पंचम / कैशिक पंचम
17.	आलापिनी	पंचम		पंचम	
18.	मदन्ति				
19.	रोहिणी				
20.	रम्या	धैवत		धैवत	विकृत धैवत
21.	उग्रा				
22.	क्षोभिनी	निषाद		निषाद	

द्वितीय तालिका :- निम्नं तालिका में सभी ग्रन्थों के वर्णित विकृत स्वरों को दर्शाया गया है | सभी ग्रन्थों में शुद्ध स्वरों की स्थिति नाटयशास्त्र के समान ही है, इसीलिए प्रस्तुत तालिका में शुद्ध स्वरों की स्थिति को नहीं दर्शाया गया | अतः सभी ग्रन्थों में शुद्ध स्वरों की स्थिति भरत के अनुसार ही समझे |

क्र० सं०	**श्रुतियों के नाम**	**राग तरंगिणी**	**स्वरमेल कलानिधि**	**सद्राग चन्द्रोदय**	**रागमाला**	**राग मंजरी**	**रस कौमुदी**
1.	तीव्रा	तीव्र नि	कैशिक नि	कैशिक नि	तीनगतिक ध /एकगतिक नि	अति उच्छङखल ध /कैशिक नि /एक गतिक नि	कैशिक नि
2.	कुमुद्वती	तीव्रतर नि	काकली नि	काकली नि	दोगतिक नि	काकली नि/दो गति नि	काकली नि
3.	मन्दा	तीव्रतम नि	च्युत सा-नि	लघु सा	तीनगतिक नि		पत सा
4.	छान्दोवती						
5.	दयावती						
6.	रंजनी	कोमल रे					
7.	रक्तिका						
8.	रोद्री				एकगतिक रे	कैशिक रे	
9.	क्रोधा				दोगतिक रे	उच्छङखल रे	
10.	वज्रिका	तीव्र ग	साधारण ग	साधारण ग	तीनगतिक रे /एकगतिक ग	अति उच्छङखल रे /साधारण एकगति ग	साधारण ग
11.	प्रसारिणी	तीव्रतर ग	अंतर ग	अंतर ग	दोगतिक ग	साधारण ग /दो गति ग	अंतर ग
12.	प्रीति	तीव्रतम ग	च्युत म-ग	लघु म	तीनगतिक ग	तीन गति ग	पत(उपान्त्य) म
13.	मार्जनी	अतितीव्रम ग			चतुर्गतिक ग	ऊर्ध्वखल ग	
14.	क्षिति	तीव्र म			एकगतिक म	मनु म	
15.	रक्ता				दोगतिक म	पंक्षातिक म	
16.	संदीपिनी		च्युत प	लघु प	तीनगतिक म	नृप म	पत(उपान्त्य) प
17.	आलापिनी						
18.	मदन्ति						
19.	रोहिणी	कोमल ध					

20.	रम्या						
21.	उग्रा				एकगतिक ध	कैशिक ध	
22.	क्षोभिनी				दोगतिक ध	उच्छङखल ध	

तृतीय तालिका :-

क्र०	श्रुतियों के नाम	राग विवोध	चतुर्दंडीप्रकाशिका	अनुप संगीत विलास	संगीत पारिजात	हृदय प्रकाश /हृदय कौतुक
1.	तीव्रा	कैशिक नि / तीव्रतम ध	कैशिक नि	तीव्रतम ध/तीव्र नि	तीव्र नि	तीव्र नि
2.	कुमुद्वती	काकली नि	काकली नि	अतितीव्रतम ध / तीव्रतर नि	तीव्रतर नि	तीव्रतर नि/काकली नि
3.	मन्दा	मृदु सा		तीव्रतम नि	तीव्रतम नि	तीव्रतम नि /मृदु सा
4.	छान्दोवती			अतितीव्रतम नि / अतिअति कोमल रे		
5.	दयावती			अति कोमल रे	पूर्व रे	
6.	रंजनी			कोमल रे / अतिअति कोमल ग	कोमल रे	कोमल रे
7.	रक्तिका			अति कोमल ग	पूर्व ग	
8.	रोद्री	तीव्र रे		तीव्र रे /कोमल ग	तीव्र रे /कोमल ग	तीव्र रे
9.	क्रोधा	तीव्रतर रे		तीव्रतर रे	तीव्रतर रे	तीव्रतर रे
10.	वज्रिका	साधारण ग /तीव्रतर रे	साधारण ग	तीव्रतम रे/तीव्र ग/अतिअति कोमल म	तीव्र ग	तीव्र ग
11.	प्रसारिणी	अंतर ग		अतितीव्रतम रे /तीव्रतर ग / अति कोमल म	तीव्रतर ग	तीव्रतर ग
12.	प्रीति	मृदु म	अंतर ग	तीव्रतम ग/ कोमल म	तीव्रतम ग	तीव्रतम ग
13.	मार्जनी	तीव्रतम ग		अति तीव्रतम ग	अतितीव्रतम ग	अतितीव्रतम ग
14.	क्षिति			तीव्र म	तीव्र म	तीव्र म
15.	रक्ता	तीव्रतम म		तीव्रतर म	तीव्रतर म	तीव्रतर म
16.	संदीपिनी	मृदु प	वराली म	तीव्रतम म	तीव्रतम म	तीव्रतम म
17.	आलापिनी			अति तीव्रतम म/ अतिअति कोमल ध		
18.	मदन्ति			अति कोमल ध	पूर्व ध	
19.	रोहिणी			अतिअति कोमल नि/कोमल ध	कोमल ध	कोमल ध
20.	रम्या			अति कोमल नि	पूर्व नि	
21.	उग्रा	तीव्र ध		तीव्र ध/कोमल नि	तीव्र ध /कोमल नि	तीव्र ध
22.	क्षोभिनी	तीव्रतर ध		तीव्रतर ध	तीव्रतर ध	तीव्रतर ध

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय संगीत में भिन्न-भिन्न काल खण्डों में स्वरों की संख्या के विषय में विचार किया गया है | भिन्न-भिन्न काल खण्डों में भिन्न-भिन्न ग्रंथकारों ने तत्कालीन संगीत की आवश्यकता अनुसार स्वरों की संख्या का उल्लेख किया है | प्रस्तुत शोध पत्र में भिन्न-भिन्न ग्रंथकारों द्वारा उल्लेखित स्वरों को तालिका में 22 श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना सहित दर्शाया गया हैं | उपर्युक्त अध्ययन में भारतीय संगीत में स्वरों का महत्वपूर्ण स्थान तो स्पष्ट होता ही है, अपितु यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक प्रत्येक ग्रंथकार ने केवल विकृत स्वरों की संख्या में ही परिवर्तन किया है, शुद्ध स्वरों की संख्या वैदिक काल में ही 7 हो गई थी तथा वर्तमान समय में भी सात ही है | अतः अनुमानित रूप से कहा जा सकता है कि भविष्य में भी अगर स्वरों की संख्या में परिवर्तन की अनुभूति हुई तो परिवर्तन सम्भवता विकृत स्वरों में ही होगा | शुद्ध स्वरों की संख्या 7 वैज्ञानिक दृष्टि से भी पूर्ण एवं अपरिवर्तनीय है |

संदर्भ

1. शर्मा डॉ. स्वतंत्र. (1996).भारतीय संगीत का वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग, पृष्ठ संख्या-41
2. सिंह ठाकुर जयदेव.(2016). भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी तृतीय संस्करण,पृष्ठ संख्या-46
3. शर्मा डॉ. स्वतंत्र. (1996). भारतीय संगीत का वैज्ञानिक विश्लेषण, अनुभव पब्लिशिंग, पृष्ठ संख्या-37
4. चौधरी सुभाष रानी.(2002). संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत, कनिष्का पब्लिश डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 50
5. सिहं प्रो० ललितकिशोर. (2011).ध्वनि और संगीत, भारतीय ज्ञानपीठ 18, सातवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या – 147
6. टाक डॉ. तेज सिंह. (2003). संगीत विज्ञानं एवं गणित, बेकराँ आलीम फाउंडेशन लखनऊ, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 2
7. टाक डॉ. तेज सिंह. (2003).संगीत विज्ञानं एवं गणित, बेकराँ आलीम फाउंडेशन लखनऊ, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या – 57